

वार्तालाप नं. 530, बम्बई, ता: 9.3.08  
Disc.CD No.530, dated 9.3.08 at Bombay

जिज्ञासु — बाबा, भगवान ही सारा खेल रचता है .....

बाबा — भगवान ही सारा खेल रचता है! पूछ रहे हैं?

जिज्ञासु — ऐसा बोलते हैं।

**Student:** Baba, God Himself creates the entire drama....

**Baba:** God Himself creates the entire drama! Are you asking?

**Student:** It is said like this.

बाबा :- मुरली में वही तो आया। कोई कहते हैं— ये सारा खेल भगवान ही रचते हैं। तो भगवान थोड़े ही ये खेल रचते हैं। वास्तव में भगवान जिसमें प्रवेश करता है और जो सबसे ब्रॉड ड्रामा बजाता है रंगमंच पर, वो तो हीरो पार्टधारी है। जो हीरो पार्टधारी सबसे जास्ती ब्रॉड ड्रामा बजाता है, वो ही भक्तिमार्ग में सबसे ज्यादा शास्त्र लिखता है। तो ज्यादा शास्त्र किसने लिखे? व्यास ने लिखे। वो ही सबसे ज्यादा ड्रामाबाजी करता है। भगवान थोड़े ही ड्रामाबाजी करता है। भगवान को ये सब ड्रामाबाजी करने की क्या दरकार? वो तो आता है, सिर्फ रास्ता बताता है। अपनी—2 कथा—कहानियाँ लम्बी—2 चौड़ी—2 सारी कथा—कहानियाँ काहे में लिख दीं? अपने—2 शास्त्रों में लिख दीं। तो बनाया किसने? जिन्होंने ड्रामा बनाया, उन्होंने ही बैठ करके लिखा। वो ही भक्तिमार्ग का विस्तार करते हैं।

**Baba:** The same thing has been mentioned in the Murli. Some people say that, God Himself creates this entire drama. So, God doesn't create this drama. Actually, the one in whom God enters and the one who plays the maximum (role) in the broad drama on this stage is the hero actor. The hero actor who plays the maximum part in the broad drama writes the maximum scriptures in the path of worship. So, who wrote more scriptures? (Sage) Vyas wrote it. He enacts the maximum. God does not enact. Where is the need for God to enact in such a way? He comes and just shows the path. In what have they written their biographies, the lengthy stories? They have written it in their scriptures. So, who created it? The ones, who created the drama, sat and wrote. It is they who expand the path of worship.

समय — 01.40

जिज्ञासु — बाबा, सीढ़ी के चित्र में सतयुग में पहले राधा—कृष्ण का फोटो दिखाया। उसके बाद में लक्ष्मी—नारायण का। राधा—कृष्ण छोटे रूप में, लक्ष्मी—नारायण को बड़े रूप में दिखाया। राधा—कृष्ण लक्ष्मी—नारायण की संतान हैं, तो राधा—कृष्ण को पहले कैसे बताया?

**Time:** 01.40

**Student:** Baba, in the picture of the ladder, in the Golden Age, first the photo of Radha Krishna has been shown. After that the photo of Lakshmi-Narayan has been shown. Radha & Krishna have been shown in a young form, whereas Lakshmi and Narayan have been shown in a grown up form. If Radha and Krishna are the children of Lakshmi and Narayan, then why have Radha and Krsihna been shown before them?

बाबा — वास्तव में जो लक्ष्मी—नारायण सतयुग के आदि की सीढ़ियों (के बाहर) में दिखाए गए हैं, वो वह लक्ष्मी—नारायण दिखाए गए हैं जिन्हें संगमयुगी नर—नारायण कहा जाता है। इसलिए कृष्ण को भी बड़े रूप में दिखाया गया है और उनकी जो पैदाइश है, वो सतयुग में पहले जन्म में होती है। उनको छोटे बच्चों के रूप में दिखाया है। ऐसे ही ये लक्ष्मी—नारायण के चित्र में भी है। पहले नर नारायण फिर उनके बच्चे राधा—कृष्ण। बाकी लक्ष्मी—नारायण के चित्र में संगमयुगी राधा—कृष्ण को नहीं दिखाया है और जो सीढ़ी का चित्र है, उसमें संगमयुगी राधा—कृष्ण को

पहले दिखाया है। फिर बड़े होने पर (संगमयुगी) लक्ष्मी—नारायण के बच्चे राधा—कृष्ण दिखाए हैं।

**Baba:** Actually, the Lakshmi and Narayan, who have been shown outside the initial steps of the Golden Age, are the ones who are called the Confluence-aged Nar-Narayan. That is why Krishna has been shown in a grown-up form as well and they are born in the first birth of the Golden Age. They have been shown in the form of small children. Similarly, this is shown in the picture of Lakshmi and Narayan as well. First Nar-Narayan and then their children Radha-Krishna. As regards the picture of Lakshmi and Narayan, the Confluence-aged Radha and Krishna have not been shown. And in the picture of ladder the Confluence-aged Radha and Krishna have been shown first. When they grow up (to become Confluence aged) Lakshmi and Narayan; their children Radha and Krishna have been shown.

समय — 03.23

जिज्ञासु — बाबा, सेमिनार और कचहरी में क्या फर्क है?

बाबा — कचहरी का मतलब ये है कि — कोई भी बातें उल्टी-पल्टी करते हैं, फिर उन बातों को लेकर के आपस में लेन-देन करते रहते हैं — इसने ऐसा किया, ऐसा कहा, वैसा कहा, ऐसा ठीक नहीं कहा, वैसा ठीक नहीं कहा — वो हो गई कचहरी और सेमिनार तो जैसे कॉन्फ्रेंस होती है, ऐसे सेमिनार होती है।

Time: 03.23

**Student:** Baba, what is the difference between a seminar and a court (*kachahari*)?

**Baba:** *Kachahari* means that if someone speaks something confusing, then they exchange views with each other about those topics: this one did like this, said like this, said like that, he did not speak this correctly, he did not speak that correctly. That is called a *kachahari* and as regards seminar; just as there are conferences, similarly there are seminars.

समय — 04.02

जिज्ञासु — बाबा, भगवान तो एक हैं और जिनमें प्रवेश करते हैं, वो भगवान— भगवती बनते हैं।

बाबा — भगवती तो फिर दूसरी हो गई ना!

जिज्ञासु — त्वमेव माता च पिता त्वमेव कहा है।

बाबा — “त्वमेव माता च पिता त्वमेव” जो कहा है उसका अर्थ है— अर्धनारीश्वर। जिसमें ब्रह्मा की सोल प्रवेश करके पार्ट बजाती है। है एक ही, जिसको दूसरे शब्दों में कहा गया — ‘बापदादा।’

Time: 04.02

**Student:** Baba, God is one and the one in whom He enters become Bhagwaan-Bhagwati (God-Godess).

**Baba:** Bhagwati is a different person, isn't she?

**Student:** It has been said, ‘you are the mother and the father’ (*twamev mata cha pita twamev*).

**Baba:** ‘*Twamev mata cha pita twamev*’ means ‘*Ardhanaareeshwar*’ (half male and half female) in which the soul of Brahma enters and plays its part. It is only one (personality), which has been called ‘Bapdada’ in other words.

जिज्ञासु — वही लक्ष्मी—नारायण के रूप में.....

बाबा — लक्ष्मी—नारायण के रूप में लक्ष्मी जो है, वो तो भगवती है। भगवान एक होता है। “गॉड इज वन” कहा जाता है। वो सिर्फ लक्ष्मी का टाइटिल मात्र है।

जिज्ञासु — जिसमें प्रवेश करते हैं.....

बाबा — वो ही है।

जिज्ञासु — मुर्कर रथ में प्रवेश करते हैं।

**Student:** They are in the form of Lakshmi-Narayan....

**Baba:** In the form of Lakshmi and Narayan, Lakshmi is Bhagwati. God is one. It is said, 'God is one'. That is just a title of Lakshmi.

**Student:** The one in whom He enters....

**Baba:** It is only Him .

**Student:** He enters in the appointed chariot.

बाबा — जिस मुर्कर रथ में प्रवेश करते हैं, वो ही त्वमेव माता च पिता त्वमेव। त्वम माने त्वम्, युवाम्, युयम्। त्वम् कहा जाता है एक को। जिसकी एक में गिनती। जब लक्ष्मी-नारायण कहा जाएगा, तो दो हो गए कि एक हुआ?

जिज्ञासु — दो हो गए।

बाबा — हाँ, तो गॉड फादर नहीं कहा जा सकता। गॉड इज वन और वही फादर है। लक्ष्मी को फादर नहीं कहेंगे।

जिज्ञासु — लक्ष्मी-नारायण को ये जो भगवान-भगवती की उपाधि मिलती है ना!

बाबा — वो मात्र उपाधि है। असली नहीं हैं। असली भगवान तो एक ही है, जो निराकारी स्टेज वाला है। लक्ष्मी निराकारी स्टेज वाली नहीं होती।

**Baba:** The appointed chariot, in which He enters, is *twamev mata cha pita twamev*. *Twam* means *twam* (you), *yuvaam* (both of you), *yuyam* (all of you). *Twam* means one, who is counted as one. When it is said, 'Lakshmi-Narayan', are they two or one?

**Student:** They are two.

**Baba:** Yes, so He cannot be called God the Father. God is one and He is the Father. Lakshmi cannot be called the Father.

**Student:** Lakshmi and Narayan receive the title of *Bhagwaan-Bhagwati*, don't they?

**Baba:** It is just a title. It is not true. Actual *Bhagwaan* is only one, who has an incorporeal stage. Lakshmi does not have an incorporeal stage.

समय — 05.45

जिज्ञासु — बाबा, आज मुरली में आया कि — मैं जानी-जाननहार नहीं हूँ।

बाबा — नहीं हूँ; ठीक है। जानी-जाननहार 500-700 करोड़ के दिल को जानकर के क्या करेगा? जरूरत है? जरूरत ही नहीं। खास-2 मुख्य पार्टधारियों के बारे में बताता हूँ, 5-7 के बारे में। अष्टदेव कहो, सात-आठ नारायण कहो, सात-आठ धर्मपिताएँ कहो। उनके बारे में डिटेल दे देता हूँ।

Time: 05.45

**Student:** Baba, today it has been said in the Murli that, "I am not the one who knows everything (*jaani-jaananhaar*)".

**Baba:** I am not (*jaani-jaananhaar*). It is correct. *Jaani-Jaananhaar*. What will He do by knowing the heart of 5-7 billion people? Is there any need? There is no need at all. I tell about the special main actors, about 5-7 actors. Call them the eight deities, call them seven-eight Narayans, and call them seven-eight religious fathers. I give their details.....

समय — 06.54

जिज्ञासु — बाबा, व्यास का पार्ट किसका है?

बाबा — इतना बड़ा क्लास लगा हुआ है। 'वि' माना विशेष और 'आस' माना बैठ जाए। तो इनमें सब तो उठ-उठ के भागते रहते हैं। खास कौन बैठा रहता है? जो विशेष रूप से इसी काम के लिए बैठा रहे। क्या? उसका शास्त्रों में नाम पड़ गया — व्यास, और व्यास की भी गद्दियाँ चली हैं। एक व्यास ने शरीर छोड़ा, तो उसका जो चेला गद्दी पर बैठा, उसका नाम व्यास रख दिया। फिर गद्दी का ही नाम रख देते हैं — व्यास गद्दी। जो भी बैठेगा, उसी का नाम व्यास। जिज्ञासु — जैसे — शंकराचार्य का होता है।

बाबा— नहीं। शंकराचार्य की व्यास गद्दी नहीं।

जिज्ञासु — माना जो भी गद्दी पर बैठेगा वो शंकराचार्य बनेगा बाबा।

बाबा :- हैं।

**Time: 06.54**

**Student:** Baba, who plays the part of Vyas?

**Baba:** Such a big class is going on. *Vi* means *vishesh* (special) and '*aas*' means 'sits'. So, among these everyone keeps running away. Who continues to sit especially? The one who especially continues to sit for this task. What? He has been given the name in the scriptures as '*Vyaas*'. And even Vyas had his successors. When one Vyas left his body, then the follower, who occupied his seat, was named Vyas. Then the seat itself is named as the '*seat of Vyas*'. Whoever sits on it will receive the title of Vyas.

**Student:** For example, Shankaracharya.

**Baba:** No. Shankaracharya's seat is not a seat of Vyas.

**Student:** Baba, I mean to say whoever sits on his seat will become Shankaracharya.

**Baba:** Hm.

**समय — 08.07**

जिज्ञासु — बाबा, राम-कृष्ण के कम्बाइन्ड स्वरूप को विष्णु कह सकते हैं?

बाबा — राम और कृष्ण के कम्बाइन्ड स्वरूप को विष्णु इसलिए नहीं कह सकते कि — दोनों मेल (male) हो गए। वो चार भुजाएँ तो बनी नहीं। एक भुजा कृष्ण की आत्मा रूपी सहयोगी और एक राम की आत्मा रूपी सहयोगी। तो दो ही भुजाएँ बनीं और विष्णु को तो चार भुजाएँ चाहिए। तो उनकी सहयोगिनी शक्तियाँ भी लेनी पड़ें। उनके जीवन काल में जिसने उनको सबसे जास्ती सहयोग दिया, वो भी चाहिए।

**Time: 08.07**

**Student:** Baba, can the combined form of Ram and Krishna be called Vishnu?

**Baba:** The combined form of Ram and Krishna cannot be called Vishnu because both are males. They did not constitute the four arms. One helper arm in the form of the soul of Krishna and one helper arm in the form of the soul of Ram. So, these constituted just two arms. And Vishnu requires four arms. So, their helper shaktis will also have to be included. The souls who gave the maximum co-operation to them in their lifetime are required as well.

**समय — 09.04**

जिज्ञासु — बाबा, संगमयुग में विशेष रूप से आसन लगा के बैठना एक का ही पार्ट है?

बाबा — किसका?

जिज्ञासु — संगमयुग में व्यास का जो पार्ट है, विशेष रूप से आसन लगाना.....

बाबा — संगमयुग में भक्तों का पार्ट नहीं होता है। शास्त्र लिखना, करना — ये व्यास का काम है।

जिज्ञासु — .....

बाबा — हाँ, संगमयुग की यादगार है।

जिज्ञासु — संगमयुग में क्लास में विशेष रूप से बैठा रहता है।

बाबा :- किसलिए? इसलिए वो बैठता है कि उसको तो समझाना है। शास्त्र नहीं लिखना है।

**Time: 09.04**

**Student:** Baba, is it the part of only one soul to sit in a special posture *aasana* at Confluence age?

**Baba:** Whose?

**Student:** The part of Vyas to sit in a special posture.....

**Baba:** There is no part of devotees in the Confluence Age. Writing scriptures, etc. is the work of Vyas.

**Student:**.....

**Baba:** Yes, it is the memorial of the Confluence Age.

**Student:** He sits in a special way in the class in the Confluence Age.

**Baba:** Why? He sits because he has to explain. He does not have to write scriptures.

जिज्ञासु — जो उस गद्दी पर बैठता है, एक ही है ना!

बाबा — बैठते हैं ना। गद्दी पे बैठते नहीं हैं? ब्रह्मा बाबा के जाने के बाद क्या बैठे नहीं?

जिज्ञासु — ब्रह्मा बाबा को व्यास नहीं कह सकते हैं न बाबा।

बाबा — ब्रह्मा बाबा को व्यास नहीं कहेंगे; लेकिन जब तक जानकारी नहीं है तब तक उनको क्या समझा? बच्चों को उनके मुकाबले कोई और ज्यादा बैठ करके समझाने वाला था? कोई नहीं था। तो उन्हीं को मानना पड़े।

**Student:** The one, who occupies that seat (*gaddi*), is just one (person), isn't it?

**Baba:** They sit, don't they? Don't they occupy the seat? Did they not sit after Brahma Baba departed?

**Student:** Baba, Brahma Baba cannot be called Vyas, can he be?

**Baba:** Brahma Baba will not be called Vyas, what did they consider him up until they had the information? Was there anyone other who sat and explained to the children more than him? There was nobody else. So, he will have to be accepted (as Vyas at that time).

जिज्ञासु — तो गद्दी चलाना — ये तो भक्तिमार्ग है।

बाबा — इसीलिए तो बताया — विशेष आस। एक होता है आसन मार करके बैठ जाना। लक्ष्य क्या है? कोई समझे या न समझे उनको बैठना है। और यहाँ लक्ष्य क्या है? यहाँ तो समझाना है। बात बुद्धि में न बैठे तो काम ही पूरा नहीं होगा। वहाँ तो काम पूरा हो या न हो, वहाँ कोई लक्ष्य ही नहीं है। काम क्या करेंगे! भक्तिमार्ग में कोई लक्ष्य होता है? नहीं।

**Student:** So, accession of the seat is a path of worship.

**Baba:** That is why it has been said, *vishesh aas* (special *asana*). One is to sit in a special *asana* (posture). What is the target? Whether someone understands or not he has to sit. And what is the target here? Here He has explain. If the issue does not sit in the intellect then the task will not be completed at all. There, whether the task is completed or not, there is no target there. What will they do? Is there any target in the path of worship? No.

समय — 11.18

जिज्ञासु — बाबा, विष्णु और वैष्णवी में अंतर क्या है?

बाबा — जैसे महालक्ष्मी कहते हैं, महानारायण कहते हैं। महानारायण में पुरुष आगे और महालक्ष्मी में स्त्री चोला आगे। ऐसे ही विष्णु और वैष्णवी। विष्णु में पुरुष चोला आगे है और वैष्णवी में दोनों स्त्री चोले आगे हैं। बाकी ऐसे नहीं कि वैष्णवी कोई विधवा है।

Time: 11.18

**Student:** Baba, what is the difference between Vishnu and Vaishnavi?

**Baba:** For example, they say Mahalakshmi, Mahanarayan. In MahaNarayan the male (body) is in the front and in Mahalakshmi the female body is in the front. Similar is the case with Vishnu and Vaishnavi. The male body is in the front in Vishnu and both the female bodies are in front in Vaishnavi. And for the rest of all, it is not as if Vaishnavi is a widow.

समय — 12.01

जिज्ञासु — बाबा, बोला है — "गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु देवो महेश्वरः और गुरु साक्षात् परमब्रह्म" ये परमब्रह्म मतलब निराकार शिव की बात हुई?

बाबा :— वो तो ब्रह्म को ही भगवान समझ लिया है, इसीलिए परमब्रह्म कह देते हैं। हमें तो पता है — ब्रह्म तो रहने का स्थान है। ब्रह्म कोई भगवान नहीं है, इसलिए गुरु ब्रह्मा, गुरु जो

होगा, वो साकार होगा या निराकार होगा? गुरु तो साकार ही होता है। वो श्लोक उन्होंने बनाया है, वो तो अपने दृष्टिकोण से बनाया है। अब हमको समझ में आता है कि – गुरु ब्रह्मा वो नीची स्टेज में साकार दुनियाँ की ओर। गुरु विष्णु, वो भी मध्य की स्टेज है। गुरु देवो महेश्वरः, महा ईश्वर। ईश्वर माने ब्रह्मा ने भी ब्राह्मणों को कन्ट्रोल किया, वैष्णवी भी कन्ट्रोल करती है; लेकिन ब्रह्मा को भी और विष्णु को भी, सबको कन्ट्रोल में करने वाला ऊपर तीसरा तबक्का है। वो महा-ईश्वर कहा जाता है।

**Time: 12.01**

**Student:** Baba, it has been said, '*Gurur Brahma Gurur Vishnu, Gurur Devo Maheshwarah*' and '*Guru Saakshaat Parambrahm*'. Does *Parambrahm* mean the incorporeal Shiv?

**Baba:** They have considered 'Brahm' to be God; that is why they say Parambrahm. We know that Brahm is a place of residence. Brahm is not God. That is why as regards '*Gurur Brahma*', will the guru be corporeal or incorporeal? Guru is corporeal. They have made that shloka; they have made it from their own point of view. Now we understand that *Gurur Brahma* is in a lower stage towards the corporeal world. Also *Gurur Vishnu* is in a middle stage. *Gurur Devo Maheshwarah, Maha Eeshwar*. *Eeshwar* means that even Brahma controlled the Brahmins, Vaishnavi controls as well, but the the third stage above is the one who controls even Brahma and Vishnu as well. He is called *Mahaa Eeshwar*.

जिज्ञासु – “गुरु साक्षात् ब्रह्म” का वहाँ पे कोई अर्थ नहीं हुआ?

बाबा – ब्रह्म तो भगवान है ही नहीं। साक्षात् भगवान जो है, वो महा-ईश्वर के द्वारा ही साक्षात् माना सामने।

जिज्ञासु – नहीं, जैसे अभी ज्ञान में कहते हैं कि – त्रिमूर्ति शिव है।

बाबा – उन्होंने तो चार दिखा दिए हैं।

जिज्ञासु – त्रिमूर्ति शिव तीन मूर्तियों के द्वारा ही प्रत्यक्ष होते हैं। जो सुप्रीम सोल शिव हैं, वो इन तीनों से ऊपर हो गए ना बाबा?

बाबा – ऊपर और नीचे तब कहाँ होता है? साकार लोक में या निराकार लोक में?

जिज्ञासु – साकार लोक में होता है।

**Student:** Isn't there any meaning of '*Guru saakshaat Brahm*' there?

**Baba:** *Brahm* is not God at all. God becomes *saakshaat*, i.e. face to face only through *Mahaa-Eeshwar*, *saakshat* means in front of the eyes.

**Student:** No, just as it is said now in the knowledge that there is Trimurty Shiv.

**Baba:** They have shown four.

**Student:** Trimurty Shiv reveals only through three idols. The Supreme Soul Shiv is above all these three, isn't He Baba?

**Baba:** Then where is above and below? Is it in the corporeal world or in the incorporeal world?

**Student:** It is in the corporeal world.

बाबा– तो फिर! ब्रह्मलोक कहाँ से चले गए?

जिज्ञासु – तीनों की रचना करने वाले तो वही हैं ना।

बाबा – रचना साकार दुनियाँ में होती है या निराकारी दुनियाँ में होती है? रचना माना जो चीज पहले नहीं थी।

**Baba:** So, then? How did they go to the *Brahmlok* (abode of Brahma)?

**Student:** He is the one who creates all the three, isn't He?

**Baba:** Does creation take place in the corporeal world or in an incorporeal world? Creation means the thing that was not present earlier.



जिज्ञासु – बाबा, सारी बात तो यहाँ पे साकार में ही हो रही है।

बाबा – हाँ, तो साकार में जब बात हो रही है, तो ब्रह्मलोक की बात ही उड़ा दो। रचना है तो साकार दुनियाँ में है। रचयिता है तो साकार दुनियाँ में है। रचना और रचयिता का संबंध ही साकार दुनियाँ का है। रचना और रचयिता का ये खेल निराकारी दुनियाँ का है ही नहीं। निराकारी दुनियाँ में सृष्टि ही नहीं है, संसरण ही नहीं है, संसार ही नहीं है, इसलिए गुरु ब्रह्मा – ये ठीक है। गुरु विष्णु वो भी ठीक है। गुरु देवो महेश्वरः और फिर कहे – गुरु साक्षात् परमब्रह्म माना कोई चौथा अलग नहीं है। जिसको हम चौथा अलग करके देखते हैं, वो वास्तव में भगतई हो गई।

**Student:** Baba, all the topics are happening here in the corporeal form.

**Baba:** Yes, so when the issue is taking place in corporeal form, then remove the issue of *Brahmllok*. When there is a creation, it is in the corporeal world. If there is creator he is in the corporeal world. The relationship between the creation and the creator is in the corporeal world. The drama of the creation and the creator is not of the incorporeal world at all. There is no world in the incorporeal world at all, there is no contact at all, there is no world at all, that is why it is right to say, *Guru Brahma. Gurur Vishnu* is ok as well. *Gurur devo maheshwara*; and then if we say that *Gurur saakshaat parbrahma*, it does not mean that there is a separate fourth (personality). The one whom we see as the fourth separate personality is actually the (vision of a) devotee.

समय – 15.25

जिज्ञासु – बाबा, ब्रह्मा माना कृष्ण की सोल के साथ में ही सुप्रीम सोल ने पार्ट बजाया। उनकी साकारी स्टेज कैसे मिला जबकि निराकार सुप्रीम सोल उनमें प्रवेश करके पार्ट बजा रहे थे और अभी जिस प्रैक्टिकल पार्टधारी के साथ में सुप्रीम सोल का पार्ट चल रहा है, तो इस तन में प्रवेश करने के बाद ये निराकारी पार्ट कैसे बजाता है?

बाबा – विष्णु जिसे कहा जाता है, उसमें साकार और निराकार दोनों का मेल है, इसलिए विष्णु को भगवान गॉड इज वन नहीं कहा जा सकता और शंकर को वन कहेंगे।

**Time: 15.25**

**Student:** Baba, the Supreme Soul played the part along with Brahma, i.e. the soul of Krishna. Why did he achieve a corporeal stage while the incorporeal Supreme Soul was playing the part by entering him and now the practical actor with whom the part of the Supreme soul is going on; so, after entering in this body, how does He play an incorporeal part?

**Baba:** The one who is called Vishnu is a combination of both the corporeal and the incorporeal. That is why Vishnu cannot be called as 'God is one'. And Shankar will be said to be one.

जिज्ञासु – वही कृष्ण को भी गॉड इज.....

बाबा – वो तो भक्तिमार्ग की बात है।

जिज्ञासु – नहीं-2। यहाँ ज्ञान में कृष्ण को भी कहा है कि – नेक्स्ट टु गॉड इज कृष्ण।

बाबा – वो संगमयुगी कृष्ण है। जो संगमयुगी कृष्ण है, वो ही शिवबाबा है। नेक्स्ट टु गॉड इज शंकर, नेक्स्ट टु गॉड इज कृष्ण। वो तो दोनों एक ही हो गए।

**Student:** The same Krishna is called God is...

**Baba:** That is an issue of the path of worship.

**Student:** No, no. Here, in the knowledge it has been said even about Krishna that, 'next to God is Krishna'.

**Baba:** He is the Confluence-aged Krishna. The Confluence-aged Krishna himself is Shivbaba. (It has also been said in the Murlis that) 'Next to God is Shankar'; 'next to God is Krishna'. Both are one and the same.

समय – 16.46

जिज्ञासु – बाबा, बाप का जो निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी पार्ट बजता है; ये एक ही तन के द्वारा कहेंगे या ब्रह्मा के द्वारा जो पार्ट चला उसको भी इसमें शामिल करेंगे?

बाबा – ब्रह्मा के द्वारा जो निर्विकारी पार्ट चलेगा, उसमें हार्टफेल होने की कोई गुंजाइश है? निराकार जहाँ निराकारी स्टेज वाला पार्ट बजाएगा, वहाँ हार्टफेल होने की कोई बात आ सकती है? हार्टफेल विकारियों का होता है या निर्विकारियों का होगा? जितनी-2 आत्मा निर्विकारी स्टेज में स्थिर होने वाली होगी, उतनी वो हार्ट में पॉवरफुल होगी।

**Time: 16.46**

**Student:** Baba, the incorporeal, viceless and egoless part that the Father plays, will it be said to be played through the same body or will the part that was played through Brahma also be included in it?

**Baba:** If a viceless part is played through Brahma then is there any margin for a heart fail in it? The body where the incorporeal one plays a part of incorporeal stage, can any topic of heart failure arise there? Do the vicious ones suffer heart failure or do the viceless ones? The more the soul will be the one to become constant in an incorporeal stage, its heart will be powerful to that extent.

जिज्ञासु – उनका निराकारी स्टेज क्यों नहीं बना बाबा?

बाबा – वो तो माँ का पार्ट है। माँ कोई निराकारी बनती है क्या? माँ साकार होती है। माँ माने धरणी। बाप होता है बीज माना निराकार। बीज जितना सूक्ष्म उतना पॉवरफुल और धरणी जितनी विस्तारवाली उतना ही अच्छी मानी जाती है। माता की कंटगरी है। जगदम्बा ही माता है। वो ही धरणी का पार्ट है। पाँच तत्वों में मुख्य तत्व ही है – जगदम्बा।

**Student:** Why did he not achieve an incorporeal stage Baba?

**Baba:** That was the role of a mother. Does a mother become incorporeal? Mother is corporeal. *Ma* means Earth. The Father is the seed, i.e. incorporeal. The more the seed is subtle, it is powerful to that extent and the more the land is extensive, it is considered to be better. He belongs to the category of a mother. Jagdamba herself is the mother. Her part is the part of Earth. Among the five elements, the main element is – Jagdamba.

समय – 18.23

जिज्ञासु – बाबा, काली जी ने शंकर जी के ऊपर पैर क्यों रखे हैं?

बाबा – क्यों रखे हैं? भूल गई इसीलिए रख दिया। भूल से रख दिया। कोई किसी की बेइज्जती कर देता है। फिर बाद में याद आता है – हमने ये क्या किया!

**Time: 18.23**

**Student:** Baba, why has Kali placed her leg on Shankarji?

**Baba:** Why has she placed? She placed it because she forgot (that he was her husband). She placed it by mistake. Someone insults someone. Then later on he remembers – Oh no, what is it that I have done!

समय – 18.55

जिज्ञासु – सुबह का अमीर, शाम का फकीर माना क्या?

बाबा – सुबह का अमीर और शाम का फकीर। सुबह कहा जाता है सवेरे को। सवेरा अर्थात् सतयुग रूपी बेहद का सवेरा और शाम माना कलियुग का अंत, आखिरी जन्म में। नारायण वाली आत्मा सुबह को अमीर होती है और शाम को कलियुग अंत में फकीर बन जाती है। हद में भी और बेहद में भी।



**Time: 18.55**

**Student:** What is meant by 'rich in the morning and poor in the evening'?

**Baba:** Rich in the morning and poor in the evening. Morning means dawn. Dawn means the dawn-like Golden Age in an unlimited sense and evening means the end of the Iron Age, in the last birth. The soul of Narayan is rich in the morning and becomes poor in the evening, i.e. at the end of Iron Age. In a limited sense as well as in an unlimited sense.

**समय – 19.40**

**जिज्ञासु –** ब्रह्मा बाबा ने 18 जनवरी 1969 के दिन शरीर छोड़ा। उसी दिन अव्यक्त संदेश में पहले जो सेंटेंस आयी थी कि – साकार ब्रह्मा में आदि से लेकर अंत तक पार्ट बजाने का कार्य नूँधा हुआ है। तो जो अव्यक्त हुआ वो फिर से साकार कैसे बनेगा?

**बाबा –** ब्रह्मा तो साकार ही होता है। निराकार कहाँ होता है!

**Time: 19.40**

**Student:** Brahma Baba left his body on 18<sup>th</sup> January, 1969. On the same day the first sentence that was uttered in the Avyakta Sandesh was that – 'the corporeal Brahma is destined to play the part from the beginning to the end'. So, how can the one who has become *avyakt* become corporeal again?

**Baba:** Brahma is certainly corporeal. He is not incorporeal?

**जिज्ञासु –** लेकिन बी.के. वालों के मुकाबले तो अव्यक्त हो गया तो साकार कैसे?

**बाबा –** वो ब्रह्मा जो सेकेन्डरी या तीसरे नम्बर का ब्रह्मा कहें, वो तो अव्यक्त हो गया; लेकिन वास्तव में जो असली पहले नम्बर का ब्रह्मा है, ये थोड़े ही कहेंगे कि – वो शरीर छोड़ के अव्यक्त हो गया। एक होता है शरीर रहते-रहते व्यक्त और अव्यक्त होना और निराकार होना और एक होता है शरीर छोड़ करके व्यक्त से अव्यक्त बनना और अव्यक्त से निराकार बनना। एक होता है अंतःवाहक शरीर से कार्य करना और एक होता है – शरीर में रहते-रहते ही अंतःवाहक स्टेज को धारण करना। तो दोनों में अंतर हुआ ना। बोला है – ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में अंत तक नूँधा हुआ है। जब तक पूरी स्थापना नहीं हुई है, ब्रह्मा का पार्ट खत्म नहीं हो सकता। इसका मतलब साकार प्रजापिता ब्रह्मा की बात है या जो शरीर छोड़ गया उसकी बात है? जरूर साकार की बात है।

**Student:** But when compared to the BKs he has become *avyakt*, so how is he corporeal?

**Baba:** That Brahma, who could be said to be the secondary or the third Brahma, became *avyakt*, but for the one who is actually number one Brahma; it will not be said that he left the body and became *avyakt*. One thing is to become *vyakt*, *avyakt* and incorporeal while living in the body and another thing is to leave the body and get transformed from *vyakt* to *avyakt* and from *avyakt* to incorporeal. One is to work through the *antahvaahak* (subtle) body and the other is to achieve the *antahvaahak* stage while living in the body. So, there is a difference between both of them, isn't it? It has been said – Brahma is destined to play his part in the task of establishment till the end. Until establishment has taken place completely, Brahma's part cannot end. It means that is it a topic of the corporeal Prajapita Brahma or is it about the one who left his body and departed? It is certainly the topic of the corporeal.

**समय – 21.35**

**जिज्ञासु –** बाबा, पहले-पहले बाप आया – ये किसको पता चलता है?

**बाबा –** बाप की बात बाप को ही पहले पता चलेगी। दूसरे को कैसे पता चलेगी। जो अलग-2 पार्टधारी हैं – दुर्योधन के पार्ट का दुर्योधन को ही पहले पता चलेगा, रावण के पार्ट को रावण ही पहले जानेगा। अपने-अपने पार्ट को आत्मा अपने आप स्वयं जानेगी कि कोई दूसरा जानेगा या बाप बतावेंगे? किसी के पार्ट को बाप बतावेगा या कोई दूसरा जानेगा या जिसका जो पार्ट

होगा, वो ही स्वयं पहले जानेगा? जिसका जो पार्ट होगा, वो ही पहले अपने को अनुभूति करेगा।

जिज्ञासु – ज्ञान के आधार से ही करेगा ना?

बाबा – ज्ञान के ही आधार से करेगा।

**Time: 21.35**

**Student:** Baba, first of all who comes to know that the Father has come?

**Baba:** The Father Himself will come to know about the Father at first. How will any other person know? There are different actors – Duryodhan's part will be known only to Duryodhan first; Ravan will himself know Ravan's part first. Will every soul know its part itself first or will anyone else know or will the Father tell? Will the Father tell anybody's part or will anyone else know or will the person whose role it is will know it himself at first? Every person will realize his part first.

**Student:** He would realize on the basis of knowledge only, won't he?

**Baba:** He will realize only on the basis of knowledge.

समय – 22.52

जिज्ञासु – बाबा, सेवक राम जो कलकत्ते के पार्टधारी थे, वो लौकिक में सिन्धी थे कि वहाँ के कलकत्ते के बंगाली?

बाबा– (सेवकराम) बंगाली ब्राह्मण थे। वो (ब्रह्मा बाबा) सिन्धी ब्राह्मण थे। थे तो ब्राह्मण ही।

जिज्ञासु – ब्रह्माबाबा के कनेक्शन में आए थे।

बाबा – पश्चिम के ब्राह्मण अपनी कन्याओं को पूरब साइड में देना पसंद करते रहे और देते रहे।

जिज्ञासु – कास्ट को तो बहुत महत्व देते थे।

बाबा– भले नीची कास्ट का हो। उसके नीची कास्ट की कन्या होती है और ऊँचे कास्ट का वर होता है।

**Time: 22.52**

**Student:** Baba, was Sevakram who was the actor of Calcutta a Sindhi in *lokik* life or was he a Bengali of Calcutta?

**Baba:** (Sevakram) was a Bengali Brahmin. He (i.e. Brahma Baba) was a Sindhi Brahmin. They were Brahmins indeed.

**Student:** He had come in connection with Brahma Baba.

**Baba:** Brahmins from the west have been preferred to give their daughters (in marriage) to those from the Eastern side (of India) and they had been doing so.

**Student:** They used to give a lot of importance to caste.

**Baba:** Although he may belong to a lower caste (category). The daughter is of the caste lower to his and the bridegroom belongs to a higher caste.

.....  
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.